

गली मोहल्लों के कुछ खेल

मुल्कराज आनंद
चित्रकार : बहरी नारायण



गली मोहल्लों के कुछ खेल

मैं
जब भी गुज़रता हूँ
अपनी गांव-गलियों से
कस्बों के छोटे बाजारों से
बड़े शहरों की पिछली सड़कों से
एक हंसी गुंजती है,
बातचीत सुनाई देती है
हारने और जीतने के स्वर मुखर होते हैं

जानता हूँ मैं,
खेले जा रहे हैं वे और वे
पुराने और पुराने सड़क-खेल
और याद आता है बचपन,
कोशिश की है मैंने बच्चों,
उन्हीं गली-मोहल्लों के खेलों को
तुम्हें दिखाने की।

—मुल्कराज आनंद

उलटबाज़ी/कलाबाज़ी



मेरे जीवन का पहला खेल था—
कलाबाज़ी।

मेरे पिता ने यह खेल मुझे सिखाया था। मेरी पहली कलाबाज़ी
थी बिस्तर पर, कि मैं अपनी गरदन-वरदन न तोड़ लूं।
इस शुरुआत ने मुझे सिखाया कि सीधे ज़मीन पर भी मैं
कलाबाज़ी कर सकता हूं।

फिर मैंने प्रतियोगिता में भाग लिया। जो एक-के-बाद-एक,
एक-के-बाद-एक कलाबाज़ी जल्दी-से-जल्दी कर सकता था वही
विजेता होता था।

एक पिकनिक-पार्टी में अपनी सीख-सिखाई के बाद पांच से सात
वर्ष के बच्चों के बीच मैं अक्वल नंबर आया।
हल्का-फुल्का होने के कारण मैं कलाबाज़ी आसानी से कर सकता
था।

सच यह है कि बेहतर कलाबाज़ी वही कर सकता है जो कम
खाता है।

कंचे (गोलियां)



दूसरा मोहल्ले का खेल, जो मुझे अच्छे से याद है, वह था गोली,
यानी कंचे का खेल।

हम लोग सोडे की बोतल को खोलते थे जिनके ऊपर कंचा लगा
रहता था। हम ऐसे रंग-बिरंगे कंचे पास की दुकान से भी खरीदते थे।

मुझे याद आता है कि मेरे बड़े भाई को पिताजी ने पीटा था कि वह
कंचेबाज़ी में ज़रूरत से ज्यादा वक़्त खराब करते थे। सो यह खेल
हमारे लिए मना था। लेकिन दूसरों को कंचा खेलते देख, उनके साथ
खेलने को मन करता था।

हर खिलाड़ी के पास कंचा होता था। सीधी, साफ जमीन पर एक
गुच्ची बनायी जाती थी अपनी एड़ी से। इस गुच्ची से कोई दो गज़ दूर
खिलाड़ी आसपास आ जाते थे। फिर वे नीचे झुकते और कंचे को उस
गुच्ची तक फेंकते थे। कंचा उल्टे हाथ की बड़ी अंगुली से फेंका जाता
था। सीधे हाथ की बड़ी अंगुली के जोर से, जो धनुष की तरह तनी
होती थी, कंचे को मारा जाता था। जब कंचा फेंका जाता था तो कई
बार वह सामने की गुच्ची से ऊपर भी चला जाता था।

और फिर दूसरा लड़का उसी कंचे पर अपना कंचा फेंकता है। धीमे
से आगे जाता कंचा सामने की गोली को मारता है। कंचा धीमे-धीमे
आगे बढ़ता है और गुच्ची तक पहुंचता है, अगले कंचे को ढकेलता

हुआ। शोर मच जाता है— 'हुई, गोली मारी।' जैसे ही एक की गोली पर दूसरी गोली जाकर गोल कर देती है।

फिर हारा हुआ लड़का इंतज़ार करता है कि दूसरे की गोली को निशाना बनाये। जो भी सबसे पहले गुच्ची तक कंचे पहुंचा देता है, उसी की जीत होती है। इस खेल में पूरी सुबह या दोपहर बीत जाती है। खेल खत्म होने पर एक खतरा खड़ा हो जाता है कि छोटे बच्चों के सारे कंचे बड़े बच्चे छीन लेते हैं। क्योंकि बड़े लड़के छोटे लड़कों से जीत जाते थे।

कंचे खेलना सतर्क और चतुर अंगुलियों का खेल है। मेरे हाथ और अंगुलियां इतनी मोटी थीं कि यह खेल सचमुच मेरे बस का नहीं था। हां, एक-दो बार मैं चार-पांच कंचे जीता भी तो छोटका ने मेरे कंचे छीन लिये। मैं कंचे बचाने की कोशिश करता लेकिन बहुत छोटा था, सो मां से कहता कि मुझे और कंचे खरीद दो।

इकड़ी-दुकड़ी



अगला खेल जो मैंने सीखा वह था इकड़ी-दुकड़ी, जो खेला जाता था ठिप्पी से, मिट्टी के बरतन का एक टूटा-सा टुकड़ा डेढ़ इंच के करीब बड़ा और उससे छोटे गोल-चपटे पत्थर को भी ले लेते थे।

तीन गज लंबा और दो गज चौड़ा आयत बना लिया जाता था। उसके बीच एक-एक फुट के चौकोर बना लिये जाते थे। इन्हीं के बीच चार फुट की दूरी पर तीन तिकोनों से बांटकर एक क्रास (X) कटपीट बना दिया जाता था। इन तिकोनों के बीच तीन लंबी समानांतर लकीरें होती थीं।

एक पांव पर खड़े होकर लंगड़ी चाल से कूदते हुए आगे बढ़ते थे, पंजों के बल पर। ठिप्पी को पहले एक के बाद एक—तीन घरों से आगे बढ़ाकर ठेला जाता था और फिर तीन तिकोनों के बीच और अंत में इन तिकोनों के बाद तीन घरों में। यह जरूरी है कि ठिप्पी बहुत ठीक से सारे घरों को पार करती जाये।

जो भी इन घरों को सबसे पहले पार करती उस पार जा सकती है वही जीतती है। प्रतीक रूप में ये घर हैं तीन दुनिया के नक्शे—चार समंदर और तीन स्वर्ग।

आंख मिचौनी



मुझे जो खेल सबसे ज्यादा पसंद था वह था आंख मिचौनी, यानी आंखें बंद करके खेल खेलना।

जब तीन साल का था तो मुझ से बड़ी एक चचेरी बहन ने मुझे यह खेल सिखाया था। उसने मुझे हथेली से आंखें बंद करने के लिए कहा और कहीं जाकर छिप गई। फिर उसने मुझे बुलाया कि आओ और मुझे ढूंढो। मैंने उसे धोखा दिया था। मैंने अपनी अंगुलियों में कुछ दरार छोड़ दी थी, कि वह कहां छिपी है, यह देख सकूं। मैं इधर-उधर दौड़ता रहा- बरामदे में और कमरों में भी। लेकिन मैं नहीं चाहता था कि उसे पता भी लगे जब तक कि वह चारपाई के नीचे से झांकती हुई दिखाई नहीं दी। जब उसे पकड़ लिया तो मैं हंसा और ठट्ठा लगाया जैसे मैंने वाकई हर जगह खोज-पड़ताल के बाद ही उसे पकड़ा है।

जैसे-जैसे मैं बड़ा होता गया, मुझे लगा कि इस खेल में बड़ी चतुराई की ज़रूरत है क्योंकि मैं कई लड़कों के साथ खेलने लगा था। छिपने वाला इतना चतुर होता था कि आंखमिचौना, उनकी आवाज़ सुनकर भी, उनके आसपास घूमते हुए भी उन्हें छू नहीं पाता था। जो हम लोगों के बीच 'जज' होता था वह आंखमिचौना की आंखें अपनी हथेली से ऐसे भींचकर रखता था कि जब तक छिपने वाले छिप न

जायें उसे कुछ भी दिखाई नहीं देता था। होता यह था कि इस खेल में जो सबसे छोटा था वही अपने से बड़ों को पकड़ने के लिए चुना जाता था। यह भी अक्सर होता था कि बड़े लड़के जब अपने से छोटे के साथ खेलना नहीं चाहते थे तो इस खेल का बहाना करके बहुत दूर भाग जाते थे कि छोटा उन्हें पकड़ नहीं पाये। वे उसकी आंखें बंद कर देते थे और दूर दूसरा खेल खेलने चले जाते थे। कई बार मेरे साथ यह हुआ है कि मैं अकेला पड़कर रोने लगता था। लेकिन इस खेल की चालबाजी समझ कर मैं इस काबिल हो गया था कि गांव की छोटी लड़कियों के साथ अच्छे से खेल लेता था। मुझे यह भी मालूम हुआ कि आंखमिचौनी कृष्ण-कन्हैया राधा और ग्वालिनों के साथ खेलते थे। बड़े होने के बाद भी मैं यह खेल बहुत उत्साह सहित खेलता रहा हूं।



हमारा एक बहुत पुराना खेल है— तीर-कमान। यह बनाया जाता है बांस की कमचियों को तोड़कर, धागे से बांधकर, कमान से। निशाना बनाया जाता है किसी दीवार, किसी पहाड़ी को और बच्चे तीर संधानते हैं निशाने पर। हां, जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते जाते हैं वे तीर-कमान की नकली लड़ाई भी लड़ते हैं।



मैं दस साल का था जब मैंने लट्टू पर डोर बांधना सीखा। इस खेल को खेलने में हाथ की सफाई चाहिए, साथ ही रंग-बिरंगा लट्टू खरीदने के लिए जेब में पैसा भी चाहिए कि लाख-चढ़ा लट्टू खरीद सकें जिसके नीचे एक कील होती है, उसके घूमने के लिये।

लट्टू के नीचे से डोर लपेटी जाती है। फिर लट्टू को घुमाकर डोर खींची जाती है कि वह जमीन पर घूमने लगे। लट्टू गोल-गोल घूमने लगता है। जिस लड़के का लट्टू ज्यादा देर घूमता है वही जीत जाता है।

याद आता है मुझे कि पहला लट्टू खरीदने के लिये मुझे जेब में कितने पैसे जमा करने पड़े थे। लेकिन दुर्भाग्य, मैंने लट्टू घुमाया और लट्टू का खूबसूरत मिट्टीवाला सिर टट गया। फिर मैंने लकड़ी के लट्टू से खेलना सीखा और इस तरह से मिट्टी के लट्टू को घुमाना भी सीख गया।

लेकिन मैं मिट्टी से बने बड़े लट्टू को ठीक ढंग से घुमाना नहीं सीख सका।

मुझे वे सब प्यारे लगते थे जो लट्टू के उस्ताद थे, और जो इस लट्टूबाज़ी में दांव लगाते रहते थे।

गुल्ली-डंडा



जैसे-जैसे मैं ऊंचाई में और ताकत में बड़ा होता गया मैंने एक जोखिम भरा खेल गुल्ली-डंडा खेलना सीखा। मेरे बड़ों ने मुझे ताईद की कि बीस में से कम से कम एक लड़के की आंख तेज़ गुल्ली के कारण जाती रही और कहा गया कि अगर मैं यह खेल कभी भी खेलूंगा तो खासी पिटाई होगी। लेकिन गुल्ली-डंडा खेले बगैर बच्चा बड़ा कैसे हो सकता है।

गुल्ली लकड़ी से बनती है, दोनों तरफ नुकीले सिरे होते हैं। डंडा करीब एक फुट लंबा होता है— छोटी-सी बारीक लकड़ी से बना।

ज़मीन में करीब तीन इंच लंबी और दो इंच चौड़ी गुच्ची खोदी जाती है और गुल्ली उस पर रखी जाती है। खिलाड़ी अपने डंडे के एक सिरे को गुल्ली के बीचों-बीच रखकर अपनी ताकत से जोर देकर फेंकता है। दूसरे लड़के जो सामने खड़े होते हैं, गुल्ली को अपने सिर के ऊपर से जाते हुए पकड़ने की कोशिश करते हैं। अगर सामने के बच्चे गुल्ली को लपक लेते हैं तो खिलाड़ी हार जाता है। और फिर दूसरा लड़का डंडा हाथ में ले लेता है। लेकिन अगर सामने वाला गुल्ली नहीं पकड़ पाया तो खिलाड़ी वहां पहुंच जाता है जहां गुल्ली जाकर गिरी है। गुल्ली को वह फिर डंडे से उछालता है और उसकी कोशिश होती है कि वह इतनी दूर जाकर गिरे कि सामने वाले उसको पकड़ न पायें।

और इस तरह खिलाड़ी तब तक खेलता रहता है जब तक कि गुल्ली पकड़ी न जाये। या फिर गुल्ली ऊपर उछल नहीं जाती है और वह फिर दुबारा डंडे से उस पर मार नहीं कर देता। कई बार ऐसा भी होता है कि गुल्ली की नोक टूट जाती है और ठीक से उछाल नहीं पा सकती है।

खैर, मैंने किसी तरह ढंग से गुल्ली-डंडा खेलना सीख लिया। मैं तेजी और सफाई से खेलता था, पर मैं शुरुआत में गुल्ली को उतनी ताकत से नहीं उछाल पाता था कि वह सामने वालों के सिर के ऊपर से गुज़र जाये। और मैं इतना खिलाड़ी भी नहीं था कि गुल्ली सौ गज़ या उसके आगे सामने वालों के ऊपर से गुज़र जाती।

लेकिन मैंने अपने दोस्तों को चोट नहीं पहुंचाई।

कुश्ती



कुश्ती हिन्दुस्तान में बहुत पुराना खेल है। गये गुजरे दिनों में राजा-महाराजा युद्ध भले ही न लड़ते हों, लेकिन अपने कुश्तीबाजों को लड़ाई के लिए भेज देते थे। जो भी पहलवान अपने दुश्मन को हरा देता था वह राजा की ओर से विजेता माना जाता था। सदियों से कुश्ती अपना शरीर मजबूत रखने के लिए ज़रूरी मानी जाती थी।

बांहों को जकड़ना, पेट और पांव से विरोधी को पकड़ना और उसे चित कर देना बहुत ही महत्व के थे, दांव-पेंच में हारे कि गये जिसके लिये खासी ताकत की ज़रूरत होती थी। शक्ति की ज़रूरत होती थी कि विरोधी को वह चित कर सके, जब कि वह पेट के बल पत्थर की तरह उल्टा हो जाता था कि उसे उठाना मुश्किल बन जाता था। जो अच्छा पहलवान होता था वह मक्खन, दूध और काजू खाकर अपने शरीर की कद-काठी को ऐसा बना लेता था कि घंटों सामने वाले से लड़ सके।

अखाड़े की मिट्टी और पसीने सने शरीर को बहते पानी से धोना और नहाना एक ऐसा अनुभव है जो हमेशा याद रहेगा।

कबड्डी



मैं तब करीब चौदह वर्ष का था जब मैंने उस स्कूल से परीक्षा पास की जो दादा शरीर वालों का स्कूल था। मुझे कबड्डी टीम में शामिल कर लिया गया।

कबड्डी ऐसा खेल है जिसमें शरीर की शक्ति ज़रूरी है। सांस-रोक अभ्यास, फुर्ती और खेल के दांव-पेंच जानना इसमें खास हैं। कबड्डी सचमुच जंग लड़ने की तरह है।

बीचों-बीच रेत पर या नरम ज़मीन पर एक लकीर खींच दी जाती है। दोनों दल जिसमें पांच-दस या इनसे अधिक लोग शामिल होते हैं, लकीर के इस-उस तरफ खड़े हो जाते हैं।

दल के इस तरफ का लड़का विरोधी लड़कों के दल की लकीर को पार कर उस तरफ जाता है और वह बोलता जाता है—

“कबड्डी-कबड्डी-कबड्डी।” अगर वह दो या एक लड़के को भी

“कबड्डी-कबड्डी” बोलते हुए छू लेता है तो वह लड़का आऊट माना जाता है और उसे छूने वाला लड़का फिर अपने दल में वापस आ जाता है।

फिर दूसरे दल का लड़का उस पार जाता है, लेकिन अगर वह खिलाड़ी उस खिलाड़ी के द्वारा या किसी और के द्वारा पकड़ा जाता है, जिसे वह छू लेता है तो वह लड़का आऊट माना जाता है।

फिर पहले दल का खिलाड़ी दूसरे दल में जाता है।
कबड्डी जीतने के लिए यह ज़रूरी है कि एक दल, दूसरे दल के
सभी खिलाड़ियों को आऊट कर दे।

मैं कमजोर था कि बहुत देर तक आऊट न हो सकूँ लेकिन मैंने
सांस रोकने का तरीका सीख लिया था और मुझमें खेलने का साहस भी
आ गया था।

कबड्डी के मैदान से बाहर जिनका मैंने अपमान कर दिया था
उनके लिए यह बेहतर मौका होता था कि वे मुझसे बदला ले सकें।



जो खेल मुझे बचपन में पसंद था वह था पतंगबाज़ी।
मुझे बड़ा मज़ा आता था कि ऊपर, बहुत ऊपर आकाश में
रंग-बिरंगी पतंगें उड़ती थीं।
पतंगबाज़ी में बड़ी होशियारी की ज़रूरत होती है और जेब-खर्च
भी कम नहीं। सो, जब तक मैं बच्चा था मैं केवल दर्शक होकर रह
गया और दूसरों की कटी हुई पतंग को पकड़ना ही ठीक समझता था
जो पेंच खाकर कट गिरती थीं।

पतंगें कई तरह की होती हैं। कुछ वर्गाकार, कुछ आयताकार
और कुछ दो गोल आकारों से जुड़ी हुई।

पतंग बनाने में अच्छे कागज़ का उपयोग किया जाता है। पतंग
को बांस की सीखों से सीधे बांधा जाता है। फिर एक धनुषाकार सीख
उस पर बांधी जाती है। पतंग को गोंद से सीखों पर चिपका दिया जाता
है। करीब ऊपर से तीन इंच और नीचे से चार इंच मंझा बांधा जाता
है, और यह एक त्रिभुज के रूप में होता है। फिर यह पतंग चरखी में
सैकड़ों गज़ लंबे लपेटे मंझे के द्वारा बांधी जाती है, मंझा पिसे हुए कांच
और सरेस से बनाया जाता है। चरखी नये लड़के के हाथ में होती है
जो धागे को उसे घुमाते हुए छोड़ता जाता है और उस्ताद पतंग को
ऊपर चढ़ाता जाता है।

हवा पर निर्भर करता है, कि पतंग ऊपर आकाश में टिक जाये। यह भी हुआ है कि मुझसे बड़े ने पतंग की डोर मेरे हाथ में दे दी। जब वह खूब ऊपर आकाश में काफी ऊपर टिक गई थी।

डोर को थामकर पतंग को खूब ऊपर उड़ाना खूब मज़ा देता है। लेकिन कई बार इससे और कांच-सने मंझे से मेरी अंगुलियां कट जाती थीं। नतीजा यह हुआ कि मेरी अपनी पसंद की अच्छी पतंग खरीदने के लिये मुझे ज़रूरी पैसा नहीं मिलता था।

और जब मैं अपनी पतंग खरीदता था तो वह पतंग गांव की झोंपड़ियों से ऊपर भी नहीं चढ़ती थी। और जब तेज़ हवा में अपनी पतंग उड़ा लेता था तो वह किसी पेड़ की डाल पर फंस जाती थी या यह भी होता था कि एकदम पतंग कटती थी और दूसरे उसे लूट लेते थे।



इसे दो बच्चे खेलते हैं— एक के पीछे एक भागते और पकड़ते। पहला बच्चा दौड़कर लकड़ी के दरवाज़े को या कुंडी को या हत्थे को छू लेता है। फिर दौड़ लगाता है अगले दरवाज़े तक कि वह पकड़ा न जाये।

इस तरह वह एक से दूसरे दरवाज़े तक दौड़ लगाता है जब तक कि वह दरवाज़े को न छूने के कारण पकड़ा न जाये।

समझदार बच्चा भागते में गली-बाज़ार के बीच आये मोड़-तोड़ में से बचता हुआ निकल जाता है।

होता यह है कि पकड़ने वाला जब पकड़े जाने वाले को पकड़ लेता है तो पकड़ में आने वाला पकड़ने वाला बन जाता है।

झूला झूलें



सावन का महीना, बरसात के बाद अपने घरों के आसपास लड़कियां पेड़ पर झूला डाल लेती हैं। एक लड़की झूले पर बैठती है और दूसरी पेंग मारती है। जो लड़की झूले पर बैठी होती है वह झूले को ज़ोर से पेंग मारकर ऊपर चढ़ाती है और सारे समय गीत गाती रहती है।

कभी-कभी यह भी होता है कि बड़ी लड़की अपनी छुटकी को गोद में ले लेती है और खूब-खूब ऊंची उड़ान भरती है, छुटकी को वह छाती से चिपका लेती है क्योंकि वह डरी हुई होती है। जो झूले में सबसे ऊंची पेंग मारती है वही जीतती है।

